पंजीयन संख्या/RNI No.:-TELHIN/2016/70799
पीयर रिव्यूड एंड रेफर्ड जर्नल
ISSN : 2456-9445

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-5, अंक-3, आषाढ़ - भाद्रपद, 2078 / जुलाई - सितंबर, 2021

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन.
2, ए. [illegible] क्रॉस स्ट्रीट,
कामिन सेयापेट, क्रोमपेट, चेन्नई--600044.
(तमिलनाडु).
ई--मेल--srinivasan.mangadu@gmail.com

CENTRAL INSTITUTE OF HINDI HYDERABAD
Survey no.99, SCR Sy. No.593, Bapuji Nagar,
Near Soumyamya Colony, Post. Bowenpally,
Secunderabad-500 011 Telangana
Mob. 9456019635

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
हैदराबाद केंद्र
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण

(2 फरवरी, 1902 – 6 मार्च, 1995)

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडु ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी, पद्मभूषण श्री मोटूरि सत्यनारायण जी भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा प्रति वर्ष भारतीय मूल के दो विद्वानों को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

पंजीयन संख्या/RNI No.:-TELHIN/2016/70799
पीयर रिव्यूड एंड रेफर्ड जर्नल

ISSN : 2456-9445

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड–5 अंक–3 आषाढ़–भाद्रपद, 2078 / जुलाई–सितंबर, 2021

परामर्श मंडल

प्रो. जी. गोपीनाथन
पूर्व कुलपति, म.गां.अं.हिंदी वि.वि., वर्धा
ई–मेल : gopinathan.govindapanicker@gmail.com

प्रो. टी. आर. भट्ट
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी, कर्नाटक वि.वि., धारवाड
ई–मेल : trbhatdwd@gmail.com

प्रो. एम. ज्ञानम
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., मैसूर केंद्र
ई–मेल : gandhignanam@yahoo.co.in

प्रो. एम. वेंकटेश्वर
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी. इफ्लू, हैदराबाद
ई–मेल : mannar.venkateshwar9@gmail.com

प्रो. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी
पूर्व प्राचार्य, श्री वेंकटेश्वर वि.वि., तिरुपति
ई–मेल : increddy.1954@gmail.com

प्रो. प्रमोद कोवप्रत
हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, मल्लापुरम
ई–मेल : drpramodcu@gmail.com

नामदेव गौड़ा
प्रो. एवं डीन, कर्नाटक राज्य.अ.म. विश्वविद्यालय, विजयपुरा
ई–मेल : namdevgouda@gmail.com

डॉ. जयशंकर यादव
से. नि. क्षेत्रीय सहा. निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार
ई–मेल : drjaishankar50@gmail.com

डॉ. जयशंकर बाबू
सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, पांडिचेरी विश्वविद्यालय
ई–मेल : professorbabuji1@gmail.com

डॉ. वी. पद्मावती
विभागाध्यक्ष, पी.एस.जी.आर.कृ.म.महाविद्यालय, कोयंबतूर
ई–मेल : vpadmavathy@psgrkcw.ac.in

संरक्षक
श्री अनिल शर्मा 'जोशी'
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई–मेल : vicechairmankhs@gmail.com

प्रधान संपादक
प्रो. बीना शर्मा
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : dr.beenasharma@gmail.com

संपादक
डॉ. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., हैदराबाद केंद्र
ई–मेल : gwanode@gmail.com

सह–संपादक
डॉ. परमान सिंह
क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., मैसूर केंद्र
ई–मेल : cihmysore@gmail.com

प्रकाशन प्रबंधक
डॉ. निरंजन सिंह
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : niranjansingh1970@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार
श्री अरुण कुमार जैमिनि
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई–मेल : arunjaimini@gmail.com

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
हैदराबाद केंद्र
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

अनुक्रम

आमुख	:	डॉ. बीना शर्मा	05
संपादकीय **संपादक की कलम से**	:	डॉ. गंगाधर वानोडे	07

आलेख

1.	केरल का कृष्णभक्ति–आंदोलन तथा गुरुवायूर का श्रीकृष्ण मंदिर	:	डॉ. एस. तंकमणि अम्मा	09
2.	भाषा और राजनीति : तमिलनाडु के संदर्भ में	:	प्रो. एम. ज्ञानम	14
3.	हिंदी और मलयालम की पारस्परिक काव्यानुवाद यात्रा : एक अवलोकन	:	डॉ. प्रोमिला	24
4.	मलयालम के प्रमुख कवि वल्लत्तोल की कविताओं में राष्ट्रीयता	:	डॉ. बिनु पुलरी	31
5.	मलयालम स्मृति शिलाओं के शिल्पकार–डॉ. पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला	:	डॉ. उषा नायर	36
6.	'देवयानी' को पढ़ते हुए...	:	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	40
7.	समकालीन मलयालम साहित्य में प्रवासी जीवन : एक पार्श्व दर्शन	:	डॉ. बीणा जे.	45
8.	भक्त कवयित्री अक्कामहादेवी	:	डॉ. आलोक कुमार सिंह	49
9.	संत नामदेव और कनकदास का तुलनात्मक अध्ययन	:	डॉ. अनीता मोहन बेलगांवकर	55
10.	बसव धर्म की समष्टिगत दृष्टि	:	डॉ. भालचंद्र जयशेट्टी	62
11.	दक्षिण भारतीय भाषाओं में रामकथा	:	यतींद्र नाथ चतुर्वेदी	69
12.	नागमंडल : दांपत्य प्रेम की त्रासदी	:	डॉ. अमरनाथ प्रजापति	75
13.	हिंदी और कन्नड़ पारस्परिक संबंध (सांस्कृतिक संदर्भ में)	:	डॉ. मनोरंजिनी काटेमने	80
14.	तेलंगाना 'शतक सुधा' कविगण	:	डॉ.रमेश कुमार डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा	85
15.	गोंड लोकवार्ता और भाषा (तेलंगाना राज्य के आदिलाबाद जिले के विशेष संदर्भ में)	:	डॉ. सी. एच. नंद कुमार	89

16. तुलनात्मक अध्ययन : हिंदी एवं तेलुगु साहित्येतिहास : उषा कुमारी 95

17. नालडियार के नैतिक विचार : के. रामनाथन 102

18. द्रविड़ भाषाओं के साहित्य में रामकथा : डॉ. सुनील पाटिल 109

19. 'तमिल के तुलसी' डॉ. एम. गोविंदराजन : पूर्णिमा श्रीनिवासन 114

20. तमिल लेखक 'की. राजनारायण' की कहानियों में अभिव्यक्त समाज : डॉ. पी. सरस्वती 122

21. दक्षिण भारतीय भाषाओं का कॉर्पस : डॉ. सत्येंद्र कुमार अवस्थी 129

साक्षात्कार

22. हिंदी की जड़ें केरल में प्रो. आरसू और डॉ. राम प्रवेश रजक की बातचीत : डॉ. राम प्रवेश रजक 138

समीक्षा

23. दरकती दीवारों से झाँकती ज़िंदगी एक विश्लेषण 'भावुक मन से वैचारिक क्रांति तक' : डॉ. टी. सी. वसंता 143

पाठक दीर्घा 149

'तमिल के तुलसी' डॉ. एम. गोविंदराजन

पूर्णिमा श्रीनिवासन

शोध सार : 'अंजना' हिंदी उपन्यास तमिल में 'अंजनै' के नाम से प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक के अनुवाद के बारे में एक ही वाक्य कहा जा सकता है कि 'यह पुस्तक अनुवाद नहीं कहा जाएगा पाठकों से यह केवल तमिल मूल ग्रंथ ही माना जाएगा।'

बीज शब्द : तमिल, तुलसी, गोविंदराजन, अंजना

डॉ. एम. गोविंदराजन का जन्म तमिलनाडु का खलिहान माने जाने वाले ऐतिहासिक प्रसिद्ध शहर, ललित कलाओं की भूमि एवं धार्मिक स्थल तंजाऊर में 13 जुलाई 1944 को हुआ था। आप रामकृष्ण मिशन हायर सेकण्डरी स्कूल (मेईन) में हिंदी शिक्षक रहे। आप बचपन से ही सार्वजनिक कार्यों में बहुत रुचि लेते थे। अतः अध्यापन कार्य करते हुए सेवा काल में ही भाषा संगम नामक संस्था में जुड़कर साहित्यिक एवं सामाजिक सेवाएँ करते रहे। यह उल्लेखनीय बात है कि उनके इस सेवा कार्य में उनके स्कूल के सचिव स्वामीजी, प्रधान आचार्य एवं अन्य शिक्षकों का योगदान भी बहुत रहा।

बाल साहित्यकार के रूप में

शुरू में उन्होंने साहित्यिक क्षेत्र में बाल साहित्यकार के रूप में ही प्रवेश किया। सन् 1966 में ही 'पाप्पाप पाडल्गळ्', और 'करुत्तुप पाडल्गिळ्', नामक तमिल कविता की दो किताबों की रचना कर प्रकाशित किया। उनका ध्यान अनुवाद की ओर जाने लगा। 1981 में ही 'आदर्श लड़का', नामक लघु उपन्यास का हिंदी अनुवाद प्रकाशित किया। इस तरह कहानी, कविता, निबंध, नाटक, उपन्यास आदि विधाओं में अनुवाद करने लगे। मौलिक रचनाओं से बढ़कर उनकी अनूदित रचनाएँ अधिक हैं। अब तक पचास से अधिक रचनाओं का प्रकाशन हुआ है।

सेवानिवृत्ति के पश्चात तमिल–हिंदी और हिंदी–तमिल के अनुवाद में बहुत प्रशंसनीय कार्य करने लगे। आप 50 से अधिक सरकारी, गैर सरकारी संस्थानों से सम्मानित हैं। आपने साहित्य की सभी विधाओं की पुस्तकों का सफल अनुवाद हिंदी व तमिल में किया है।

राष्ट्रीय एकता की दिशा में भाषाई एकता का कार्य

राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में उनका उल्लेखनीय कार्य तमिलनाडु में हिंदी का प्रचार और उत्तर भारत में जाकर तमिल साहित्य, तमिल संस्कृति और तमिल भाषा का प्रचार करना है। यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि पी. पी. टी प्रदर्शनी द्वारा आयोजित इन कार्यों को सरकारी अनुदान या किसी संस्था की आर्थिक सहायता के बिना स्वयं किया करते थे। इस दिशा में हिंदी भाषियों को तमिल सिखाने के लिए डॉ. गोविंदराजन द्वारा रचित तीन पुस्तकें विशिष्ट

...सरल तमिल शिक्षण', और 'हिंदी–तमिल सुगम माला', आदि। इनमें श्री शक्ति तमिल मालै नामक पुस्तक के लिए एक लाख रुपए पुरस्कार राशि देकर केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने सन् 2012 में आपका सम्मान किया था।

संगम साहित्य के अनुवाद कार्य में योजना–निदेशक के रूप में

तमिल भाषा के प्राचीन संगम साहित्य 'ऐट्टुतोगै' व 'पत्तुप्पाट्टु' के 18 ग्रंथों के हिंदी पद्यानुवाद कार्य की योजना में आप ने 'निदेशक' और प्रधान शोधकर्ता के रूप में उल्लेखनीय कार्य किया है। तीस लाख रुपए की इस योजना को दस तमिल–हिंदी विद्वानों को साथ लेकर तीन साल में आपने पूरा किया।

'तमिल के तुलसी' की संज्ञा

आपने महाकवि तुलसीदास जी की बारह कृतियों में से सात कृतियों का तमिल में गद्यानुवाद किया है। उनमें रामचरित मानस का अनुवाद उल्लेखनीय है जिसे चेन्नई के वर्धमान पदिप्पगम ने प्रकाशित किया और 'विनय पत्रिका' का तमिल अनुवाद चेन्नई के 'वानदी पदिप्पगम' ने प्रकाशित किया। तुलसी की कृतियों के तमिल अनुवाद कार्य को लेकर उत्तर भारत के प्रसिद्ध हिंदी दैनिक पत्रिका 'अमर उजाला' ने आप को 'तमिल के तुलसी' की संज्ञा देकर सम्मानित किया। इस तरह हिंदीवालों ने आपको 'तमिल के तुलसी दास' के नाम से संबोधित किया है तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं है।

रामायण के बाद सीतायण

तुलसी रामायण के तमिल अनुवाद के बाद आपका दूसरा बड़ा काम था सीतायण का अनुवाद व संपादन। सीता के जन्म से लेकर उनके विवाह तक का जीवन वर्णन 'सीतायण' कहा जाता है। यह एक महा काव्य है जो केवल नेपाल के जनकपुर धाम के अंदर रसिक संप्रदाय वालों के बीच में मात्र प्रसिद्ध रहा। जबलपुर के प्रसिद्ध तमिल लेखक श्री नागराज शर्मा के आदेशानुसार उस ग्रंथ का तमिल में अनुवाद करने के लिए आप नेपाल जाकर उस ग्रंथ की एक जीर्ण–शीर्ण प्रति खोज कर लाए। वह अवधि, मैथिली और नेपाली मिश्रित भाषा में थी जिस कारण तमिल में उसका अनुवाद तुरंत संभव नहीं था। इसलिए विद्वानों की एक समिति बनाकर उसका पहले हिंदी अनुवाद का काम आपने आरंभ किया। ढाई साल के कठिन परिश्रम के बाद मिथिला संप्रदाय का 'सीतायण' नामक वह काव्य हिंदी में तैयार हुआ और उसका पूरा संपादन एक हजार पृष्ठों में आपने ही किया। अभी पता चला कि सीतायण महा काव्य के तमिल अनुवाद का आधा काम आपने पूरा कर लिया है।

डॉ. एम.गोविंदराजन का पचास वर्षीय साहित्यिक सफरनामा

सन् 1966 से उनका लेखन कार्य शुरू हो गया था। 1966 में उनकी प्रथम पुस्तक 'पाप्पा पाडल्गळ्' तमिल में निकली। इस बीच में तमिल और हिंदी में बहुत सारी रचनाएँ वे करने लगे। सन् 2016 में जब 'उंगळलि ओरुवन्

उंगळ् मुन वरुवान्' पुस्तक का प्रकाशन हुआ तब उसके लोकार्पण के सिलसिले में इलाहाबाद के विद्वानों ने 'डॉ. एम. गोविंदराजन का पचास वर्षीय साहित्यिक सफरनामा' नामक छह सौ पचास पृष्ठों की स्मारिका निकालकर उनका गौरव बढ़ाया।

2016 में आपकी साहित्यिक सेवा से प्रभावित इलाहाबाद के हिंदी विद्वानों ने आपके नाम पर 'डॉ. एम. गोविंदराजन का पचास वर्षीय साहित्यिक सफर नामा' नामक पुस्तक निकाली यह पुस्तक पाँच खण्डों में है। इसकी विशेषता है कि इसमें उल्लखित सभी विषय तमिल और हिंदी दोनों भाषाओं में हैं। इसमें दक्षिण व उत्तर भारत के विद्वतजनों के विचार, डॉ. गोविंदराजनकी रचनाओं का विवरण, पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी रचनाओं का विवरण, सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं से प्राप्त सभी सम्मान एवं प्रशस्तियों का विवरण, आप के संबंध में पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचार आदि बातों से आप के पूर्ण व्यक्तित्व, सरल स्वभाव, बड़े लोगों से प्राप्त अनुभव आदि अनेक विषयों का रोचक विवरण है।

आप की राष्ट्रीय एकता की दिशा में प्राप्त कुछ उपलब्धियाँ :

उत्तर भारत में डॉ. एम. गोविंदराजन के नाम पर भाषा सेतु सम्मान

आप सेवा निवृत्ति के उपरांत उत्तर भारत के इलाहाबाद में जाकर भाषा संगम के महासचिव के रूप में हिंदी व तमिल भाषा के तुलनात्मक व अनुवाद के क्षेत्र में सेतु का कार्य सतत कर रहे हैं। यही कारण है कि इलाहाबाद के जसरा से प्रकाशित 'गाँव की नई आवाज़' नामक पत्रिका ने (जो तीस सालों से प्रकाशित हो रही है) उनके नाम पर 2018 में 'डॉ. एम. गोविंदराजन का भाषा सेतु सम्मान' नामक एक सम्मान पुरस्कार की घोषणा की और तब से हर साल दविभाषी साहित्यकारों को बुलाकर सम्मानित किया जा रहा है। एक दक्षिण भारतीय व्यक्ति के लिए, खासकर हिंदी विरोध के लिए प्रसिद्ध तमिलनाडु के एक तमिल भाषी हिंदी साहित्यकार केलिए जो सम्मान हिंदी भाषियों ने किया है उसके लिए उत्तर भारत के सभी हिंदी भाषियों के प्रति तमिलनाडु के हिंदी साहित्यकार तथा हिंदी प्रेमियों की ओर से मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रयाग नगरी में तिरुवल्लुवरके नाम पर सड़क का नामकरण

आप भारत के अन्य प्रांतों में तमिल संस्कृति का प्रचार हिंदी के माध्यम से करना अपना लक्ष्य मानते हैं। इस दिशा में आप ने एक महान कार्य किया है। बड़ी लगन व सतत प्रयत्न के बाद आपने इलाहाबाद नगर निगम की परिषद में प्रस्ताव पारित कराके इलाहाबाद त्रिवेणी संगम के यमुना नदी के दक्षिणी किनारेवाली सड़क का नामकरण तिरुवल्लुवर के नाम पर 'तमिल के संत कवि तिरुवल्लुवर का मार्ग' रखकर उसके विधिवत लोकार्पण का कार्य भी संपन्न किया है। इस कार्य में इलाहाबाद के हिंदी विद्वान और अन्य मनीषियों के योगदान का उल्लेख करके उनके प्रति सदा नतमस्तक होते दिखाई देने वाले डॉ. एम. गोविंदराजन की सार्वजनिक क्षेत्र की सेवा इसी तरह की है।

राष्ट्रपति द्वारा सम्मान

आपकी 'भाषाई एकता द्वारा की गई राष्ट्रीय एकता की सेवा' के लिए आपको केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा पाँच लाख रुपए का पुरस्कार देकर सन् 2017 में राष्ट्रपति महामहिम प्रणब मुखर्जी द्वारा गंगाशरण सिंह पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अन्य कुछ उल्लेखनीय पुरस्कार व सम्मान

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा दो लाख रुपए सहित सौहार्द पुरस्कार (2014), इकावन हजार रुपए सहित इफ्को राज भाषा पुरस्कार नई दिल्ली द्वारा (2011) राजभाषा सम्मान, इकतीस हजार रुपए सहित श्रेष्ठ अनुवाद के लिए बाल कृष्ण गोयंका पुरस्कार (2013), बिहार सरकार द्वारा पच्चीस हजार रुपए का गंगाशरण सिंह पुरस्कार (2002) तथा नल्लि तिसैयेट्टुम का भाषा भूषण पुरस्कार आदि। इस तरह छोटे–बड़े और पचासों सम्मान व पुरस्कारों से आप सम्मानित हैं।

हिंदी–तमिल डबिंग काम

केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रस्तुत हिंदी साहित्यकारों मुंशी प्रेमचंद और कबीरदास के वीडियो का हिंदी से तमिल अनुवाद और तमिल डबिंग के कार्य में आपका योगदान प्रशंसनीय है।

पुरस्कार राशि और दान

आपको पुरस्कार राशि के रूप में ग्यारह सौ रुपए से लेकर पाँच लाख रुपए तक प्राप्त हुए हैं। आज तक आपको दस लाख रुपए से अधिक की राशि प्राप्त हो चुकी है। पर उल्लेखनीय बात है कि उन्होंने अपनी सारी पुरस्कार राशि अपने लिए न रखकर दान कर दी।

दक्षिण में हिंदी तथा उत्तर में तमिल के प्रचार–प्रसार में अनेक कार्यशालाओं का आयोजन भी आपने किया है। साथ ही हिंदी व तमिल के प्रचार–प्रसार से युक्त विभिन्न कार्यों में आप संपादक, कार्यकारी संपादक, प्रकाशक, परियोजना निदेशक और भाषा विशेषज्ञ के रूप में अपना अतुल्य एवं अमूल्य योगदान आज भी दे रहे हैं।

'भाषा भेद दूर करें! भावात्मक एकता कायम करें!' इसी सिद्धांत को लेकर भाषा के क्षेत्र में आप सेवा कर रहे हैं। आपने हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर किया है। तमिल व हिंदी उनकी दो आँखें हैं। उत्तर में तमिल व दक्षिण में हिंदी का प्रचार आप का लक्ष्य रहा है। अर्थात् भाषा सेतु कार्य कों अनवरत कर रहे हैं जो कि वास्तव में स्तुत्य है।

आपकी रचनाओं के संबंध में कुछ बातें

विद्यापति की पदावलियों का तमिल पद्यानुवाद, डॉ. रमेश पोखरियाल का काव्य 'ए वतन तेरे लिए' का तमिल पद्यानुवाद, उन्हीं के कहानी संग्रह

'संकल्प' का तमिल अनुवाद और माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी का काव्य 'साक्षी' का अभी हाल ही में किया तमिल काव्यानुवाद आदि उल्लेखनीय है।

तमिल वेद तिरुक्कुरळ् का हिंदी में गद्य व पद्यानुवाद

केंद्रीय शास्त्रीय तमिल अनुसंधान केंद्र, चेन्नई के लिए आपने तमिल वेद माने जाने वाले 'तिरुक्कुरळ्' के पूरे 1330 कुरळों का हिंदी में व्याख्या सहित पद्यानुवाद का काम पूरा कर सौंपा है।

इनके अलावा आपने 40से अधिक अनूदित व मौलिक कृतियों का सृजन किया है। सहजता, सरलता, प्रभावोद्पादकता, मर्मज्ञता, रोचकता, मौलिकता आदि आपकी रचनाओं की विशिष्टताएँ हैं। आपकी प्रत्येक रचना की चर्चा करना यहाँ असंभव है। इसलिए मैं मात्र 'अंजनै' नामक तमिल में अनूदित पौराणिक रचना के बारे में यथासंभव प्रकाश डालने का भरसक प्रयास करती हूँ। इसका सारांश निम्नांकित है:

'अंजनै' रामायण की कथा पर आधारित, यथा–तथा काल्पनिक घटनाओं का बेजोड़ संगम है। इसकी कथावस्तु आदर्शोन्मुख है। यह रामभक्त हनुमान की माता अंजनादेवी का जीवन चरित्र है। अंजना केसरकुल के राजा महेंद्र आदित्तन व रानी हृदयसुंदरी की आँखों का तारा है। जब पुत्री का जन्म हुआ, तब महेंद्र आदित्तन अपनी रानी से कहते हैं कि "माँ की कोख पुत्री के जन्म से ही पवित्र होती है।" अंजना के सयानी होने पर उनका विवाह पवनजय से होता है।

इस बीच अचानक यक्षराज कुबेर व रावण के बीच में युद्ध छिड़ जाता हैं। इस युद्ध में रावण का पक्ष लेकर लड़ने के लिए, पवनंजय को युद्ध के लिए जाना पड़ता है। भीषण युद्ध बहुत दिनों तक चलता रहता है। पवनंजय अपनी पत्नी की याद में, विरह व्यथा में तड़पता है। एक रात, अपने मित्र भुवनसुंदर को साथ लेकर, पुष्पक विमान से अपनी पत्नी के पास चोरी–छिपे जाता है। अंजना व पवनंजय दोनों प्रेम में विलीन हो जाते हैं।

पत्नी से विदाई लेते समय पवनंजय यह वचन लेता है कि वे दोनों के बीच में हुए प्रेम व्यवहार के बारे में किसी को न बताएँ। तत्पश्चात रातों रात वहाँ से वह रणभूमि वापस चला जाता है। युद्ध समाप्त होने का नाम ही नहीं लेता है। युद्ध की अवधि लंबी होती जा रही है। इधर अंजना माँ बननेवाली है। इससे अंजना की सास व ससुर अंजना के आचरण पर संदेह करते है। अंजना स्वयं को निर्दोष साबित करने में विफल हो जाती है। अतः ससुराल वाले अंजना को अपने महल से बाहर निकाल देते हैं। इस कारण उसके मायके वाले भी अंजना को त्याग देते हैं। ऐसी अवस्था में श्रावणी नामक ऋषि कन्या के कारण वह मेधादिदि आश्रम में शरण लेकर अपने बच्चे को जन्म देती है।

अंजना देवी, जो कि एक राजकुमारी व पतिव्रता रही, अप्रत्याशित कारणों से अपमानित होकर, मानसिक वेदनाओं से ग्रस्त होने पर भी, वह अपने

कर्तव्य से विचलित न होकर, अपने बच्चे को 'बजरंग बली' व वंदनीय कैसी बनाती है, यही शेष कहानी है।

एक स्त्री होने के नाते, अंजना के विभिन्न आयामों में होनेवाली विघ्न–बाधाओं तथा उसे वे किस प्रकार सामना करके विजय प्राप्त करती है, इसका एकाध उदाहरण देना चाहती हूँ। यथा–

1. अंजना एक आम नारी व सन्यासिनी के रूप में: भले ही अंजना राजकुमारी के रूप में जन्मी हो, परंतु अंजना अपने व्यवहार व मानसिकता में स्वयं को एक सरल सन्यासिनी ही मानती है। वह सदैव सरल जीवन बिताना चाहती है। अपनी इच्छानुसार उसी रूप में अपने जीवन के प्रारंभ से अंत तक जीती है। यथा–

'अंजना बहुत सरल–सादगी रही। एक बालयोगी की तरह दिखने लगी।'

'आजकल अंजना भगवान राम के स्मरण में रहकर उन्हीं की भक्ति में विलीन हो जाती है।'

2. अंजना एक कर्मठ पत्नी के रूप में : अंजना के पति उनसे प्रेमपूर्ण व्यवहार नहीं करने पर भी वह कर्मठ व आदर्श पत्नी के रूप में सहनशीलता को अपनाती है। अपने पति पवनंजय द्वारा प्रेम से व्यवहार न करने पर भी, वह अडिग विश्वास रखती है कि एक न एक दिन वे अपने पति की प्रिय बनेगी। यथा–

'अंजना अपने पति के आलिंगन में स्वयं को खो गई। अंजना अपने मन ही मन कहती है कि उनका तप सफल हो गया है।'

जब उसकी सासुमाँ अंजना के कोख भर जाने का कारण पूछती, तो अंजना अपने पति को दिए वचन निभाने के लिए मूक बन जाती है। वह अपनी सखी वसंत तिलका से कहती है–

"यदि मैं अपने पति के दिए वचन को निभाने में विफल रह गई, तो मुझे आजीवन अपमान रूपी आग में जलना पड़ेगा।"

तत्पश्चात वे अपने पति का मान रखने के लिए अपनी सासु माँ से सच बताती है। फिर भी अपनी सासु माँ को मनाने के प्रयास में विफल हुई तब वह अपनी सासु माँ से कहती है–

"इस अपमानजनक जीवन जीने से, मैं अपने पूज्य, आराध्य पति के हाथों से प्राप्त मरण को स्वीकारना उचित मानती हूँ।"

जब वह अपनी सासु माँ के निर्देशानुसार अपने मायके जा रही है, तब अपनी सखी से बोलती है– "सखी, रणभूमि से मेरे पति लौटते ही उन्हें महेंद्र नगर भेजना ताकि वह मुझे वापस यहाँ ले आएँ।"

3. पूजनीय माँ के रूप में: एक बार बालक महावीर के हाथों से सूर्यदेव को मुक्त करने के लिए इंद्रदेव ने उस बालक पर वज्रायुध से प्रहार किया। तब अपने पुत्र को हुई चोट को देखकर इंद्रदेव से रुष्ट होकर, अंजना अपने पुत्र

का पक्ष लेकर कहने लगी– ''इनके पास वज्रायुध होने के कारण, वे जो कुछ भी करें, हमें चुप रहना है क्या? लगता है कि वे भूल गए कि एक बालक ने ही, तारकासुर से इनकी मुक्ति कराई।''

वह यह भी कहती है कि इंद्रदेव ने वज्रायुध से महावीर नामक बालक पर नहीं, परोक्ष रूप से मेरे हृदय पर ही प्रहार किया हैं। उक्त शब्दों से एक माँ का वात्सल्य हमारे सामने उभरकर आता है। तत्पश्चात इंद्रदेव महावीर का नामकरण 'हनुमान' करते हैं। हनुमान को वरदान भी प्रदान करते हैं। इसके पश्चात स्वयं इंद्रदेव अंजना को प्रणिपात करके, उन्हें आशीर्वाद देने की विनती यूँ करते हैं– ''आपके सामने मैं आशीष का पात्र एक बालक हूँ। देवी! आप ऋद्रांश की माँ होने के कारण समग्र विश्व की माँ बन गई हैं।'' इससे श्रेष्ठ भाग्य एक माँ केलिए क्या हो सकता है?

एक बार विद्युतप्रभ, आश्रम कन्या श्रावणी से दुर्व्यवहार करने लगा, तो बालक महावीर उन्हें, माँ के रोकने पर भी अपने गदायुध से खूब पीटते हैं। तत्पश्चात अंजना क्रोधावेश में आकर, महावीर को मारती है और अपनी इस क्रिया के लिए रोने लगती है। स्वयं को दोषी ठहराती है– "मेरे लाल, तू निर्दोष है। फिर भी मैंने तुझे मारा। मेरी यह क्रिया मुझे सताती है।''

आदर्श माँ के रूप में अंजना अपने पुत्र के सफल जीवन के लिए, महामहेश्वर के द्वादश ज्योर्तिलिंग के दर्शन पाने के लिए अपने पुत्र को भी साथ लेकर जाती है।

सीतान्वेषण में गए हनुमान सफलता प्राप्त कर, किष्किंधा लौटकर, अपनी माँ के दर्शन पाने के लिए आते हैं, तब अंजना कहती है– "लंका जाने से पहले मुझसे आशीर्वाद लेने के लिए क्यों नहीं आए?'' तत्पश्चात सीता को लंका में छोड़कर खाली हाथ लौटे हनुमान को भी खूब डाँटती है।

रावण वध व लंका विजय के पश्चात स्वयं श्रीराम, अंजना के यहाँ आकर उन्हें प्रणिपात करके बोलते हैं "माँ, मुझे आशीर्वाद दें। आपके दर्शन मात्र से सारा कष्ट अपने आप निकल जाएगा।''

श्रीराम के निवेदन पर वे अपने पुत्र के साथ अयोध्या आई। अपने पुत्र को अपनी आँखों के सामने ही पाकर वे आह्लादित हुई। अंततः वे लोकमाता बन जाती है।

अंजना दुःख व कष्टों से पीड़ित होने पर भी, उन पीड़ाओं से मुँह न मोड़कर, दृढ़ता से लड़ी। संघर्षमय जीवन यात्रा में सफलता प्राप्त की। अपने बेटे को एक उत्तम मनुष्य बनाकर, इंद्रदेव, श्रीराम जैसे आराध्यों के हृदय में 'लोकमाता' का स्थान प्राप्त किया। इससे अधिक सम्मान एक माँ के लिए क्या हो सकता है?

'अंजना' हिंदी उपन्यास तमिल में 'अंजनै' के नाम से प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक के अनुवाद के बारे में एक ही वाक्य कहा जा सकता है

कि यह पुस्तक अनुवाद नहीं कहा जाएगा पाठकों से यह केवल तमिल मूल ग्रंथ ही माना जाएगा। ○

संदर्भ सूची :

1. 'अंजनै' हिंदी मूल : डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, तमिल अनुवादक : डॉ. एम गोविंदराजन, प्रकाशक: भाषा संगम, 67 / 40, तुलाराम बाग, इलाहाबाद–211066, प्रथम संस्करणः मार्च 2012
2. 'रावणन', हिंदी मूल : डॉ. चतुरभुज, तमिल अनुवादक : डॉ. एम. गोविंदराजन, प्रकाशक : भाषा संगम; बिहार शखा, वाणि वाटिका, शिवपूजन सहाय मार्ग, सैयदपुर, पटना–600 004, प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2010
3. 'डॉ. एम गोविंदराजन का निबंध संकलन', संपादन : डॉ. श्री विद्या बालसुब्रह्मण्यन, प्रकाशक : भाषा संगम, 67 / 40, तुलाराम बाग, इलाहाबाद–211066, प्रथम संस्करणः मार्च 2013
4. 'सेट्रिल मलर्न्दसे तामरै', लघुकथा संकलन, तमिल अनुवादक : डॉ. एम गोविंदराजन, प्रकाशक : भाषा संगम तमिलनाडु, तमिल–हिंदी तुलनात्मक अध्ययन केंद्र, 14 / 33, 2 री मंजिल, तुक्काराम प्रथम गलि, चेन्नै–17, संस्करणः दिसंबर 2002, मुद्रकः नाथन एन्ड को, चेन्नै 42
5. 'तमिल के तुलसी डॉ. एम. गोविंदराजन का 50 वर्षीय साहित्यिक सफरनामा', संपादक : डॉ. शिवगोपाल मिश्र, सहसंपादकः श्री विजय चितौरी, प्रकाशक : भाषा संगम, 67 / 40, तुलाराम बाग, इलाहाबाद–211066, प्रथम संस्करण : दिसंबर 2016
6. 'श्री सीतायण', संपादक डॉ. एम. गोविंदराजन, प्रकाशक : भाषा संगम, 67 / 40, तुलाराम बाग, इलाहाबाद–211066, प्रथम संस्करण : अप्रैल 2017
7. 'उंगलिल ओरुवन उंगळमुन्वारुवान' तमिल, ले : डॉ. एम गोविंदराजन, प्रकाशक : बहुभाषा विकास केंद्र, 17 / 7 कामराजर गलि, मेडिकल कालेज 1 गेट, तंजावूर–613004, प्रथम संस्करण : जुलाई 2016